पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय

PONDICHERRY UNIVERSITY

(मानविकी विद्यापीठ/SCHOOL OF HUMANITIES)

हिंदी विभाग

DEPARTMENT OF HINDI

Ph.D. HINDI

SYLLABUS OF Ph.D. PART-I EXAMINATIONS

(To be implemented from the year 2020-21)

रजत जयंती परिसर
Silver Jubilee Campus
आर. वेंकटरामन नगर, कालापेट
R. Venkataraman Nagar, Kalapet
पुदुच्चेरी - 605 014, भारत.
Puducherry – 605 014, INDIA.

Ph.D. HINDI

SYLLABUS OF Ph.D. PART-I EXAMINATIONS

(To be implemented from the year 2020-21)

1. Considered ratified and resolved that all candidates admitted into Ph.D. Hindi Programme without M.Phil. have to take Ph.D. Part-I Examination consisting Three papers as hereunder at the end of first year :
2.

HIND 901 - अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया
ANUSANDHAN KI PRAVIDHI AUR PRAKRIYA

HIND 902- शोध विषय: रूपरेखा और पृष्ठभूमि
SHODH VISHAY : ROOP REKHA AUR PRISHTABHUMI

HIND 903 – अनुसंधान एवं प्रकाशन नैतिकता
RESEARCH AND PUBLICATION ETHICS

Considered ratified and resolved that all the **three papers for Pre-Ph.D**. will be set valued by the External Examiner/Internal Examiner as case may be. The concerned Research Supervisor

of each candidate shall have to provide the relevant topics and model Question paper for the third paper to the Head of the Department to be forwarded to the paper setter.

3. Considered ratified and resolved that there will be 6 question in each paper of 3 hours duration for a maximum mark of 100 and the candidate has to answer 4 questions. However in paper III the last question pertaining to the topic of Research is compulsory. All questions carrying equal marks.
4. Considered ratified and resolved that all the stipulated regulations regarding Ph.D Part-I Examination will remain the same.

(For other applicable Rules and Regulations kindly refer the Ph.D Rules and Regulations of Pondicherry University)

HIND 901 -अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया
ANUSANDHAN KI PRAVIDHI AUR PRAKRIYA

प्रस्तावना :-

अनुसंधान के स्वरूप, उसकी प्रक्रिया और प्रविधि का परिचय देना इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है। अनुसंधान में विषय निर्वाचन से लेकर शोध-प्रबंध लेखन तक की प्रक्रियाओं और योजनाओं से संबंधित प्रविधि का परिचय इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत दिया जाएगा। शोध प्रबंध लेखन की विविध दशाओं में उठनेवाली पद्धतिमूलक और व्यावहारिक समस्याओं की जानकारी इस पाठ्यक्रम के बल पर शोधार्थी प्राप्त करता है।

1. अनुसंधान का स्वरूप
2. अनुसंधान प्रविधि और दृष्टि
3. ऐतिहासक अनुसंधान प्रविधि
   कःअंतरविध्यापरक अनुसंधान प्रविधि
   खःपाठलोचनात्मक अनुसंधान प्रविधि
   गःभाषावौज्ञानिक व शौलीवैज्ञानिक अनुसंधान प्रविधि
   घःतुलनात्मक अनुसंधान प्रविधि
   चःसमाजशास्त्रीय अनुसंधान प्रविधि
   छःमनोविश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रविधि
   जःसंरचनावादी अनुसंधान प्रविधि
   झःउत्तर संरचनावादी अनुसंधान प्रविधि
   णःसांस्कृतिक अध्ययनसंबंधी प्रविधि
4. प्रमुख अनुसंधान दृष्टियाँ-मार्क्सवादी, उत्तरआधुनिकतावादी, नवइतिहातवादी, दलित, ,स्त्री और निम्नवर्गीय विमर्श

सहायक पुस्तकें -

1. अनुसंधान का स्वरुप – सावित्री सिन्हा
2. अनुसंधान की प्रकिया - सावित्री सिन्हा और विजयेंन्द्र स्नातक
3. इण्ट्रडक्शनटू रिसच
4. दिस्टौट्जी आफ रिसर्च-इतर जार्ज, पोगेट थम्पसन
5. सबाल्टर्न स्टडीज- सं रंजीत गुहा
6. नवमानवतावाद – एस.एन. राय
7. नेशन एंड नेरेशन – सं. होमी जे भाभा
8. हिन्दी नवजागरण व संस्कृति – शम्भुनाथ
9. शोध प्रविधि – विनयमोहन शर्मा
10. संरचनात्मक शौलीविज्ञान रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव
11. साहित्य के समाजशास्त्री की भूमिका – मैनेजर पाण्डेय
12. दपोस्ट मॉडर्निज्म थॉट- फ्रेडरिक जामेसन
13. दपोस्ट मॉडर्न कंडीशन- ज्या फ्रांसुआल्योतार

HIND 902 - शोध विषय: रूपरेखा और पृष्ठभूमि/
SODH VISHAY : ROOP REKHA AUR PRUSHTABHUMI

प्रस्तावना :-

किसी भी शोध कार्य में अनुसंधान से संबंधित कुछ प्रारंभिक ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार शोध की एक प्रारंभिक परिकल्पना और अपने अध्ययन की रुपरेखा बनानी पड़ती है। शोध-प्रारूप वस्तुतः शोध के प्रारम्भ से अंत तक की अभिकलित कार्य-योजना है जिसमें शोधार्थी की पूरी कार्य-पद्धति दर्ज रहती है।

शीर्षक

- सही शीर्षक का चुनाव विषय वस्तु को ध्यान में रख कर किया जाए।
- शीर्षक ऐसा हो जिससे शोध निबंध का उद्देश्य अच्छी तरह से स्पष्ट हो रहा हो।
- शीर्षक न तो अधिक लंबा ना ही अधिक छोटा हो।
- शीर्षक में निबंध में उपयोग किए गए शब्दों का ही जहाँ तक हो सके उपयोग हो।
- शीर्षक भ्रामक न हो।
- शीर्षक को रोचक अथवा आकर्षक बनाने का प्रयास होना चाहिए।
- शीर्षक का चुनाव करते समय शोध प्रश्न को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है।

भूमिका / प्रस्तावना

- शोध प्रश्न को यहाँ स्पष्ट करें।
- भूमिका न तो बहुत बड़ी होनी चाहिए न ही छोटी।
- भूमिका में शोध विषय के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।
- भूमिका को रोचक बनाने का प्रयास होना चाहिए।
- भूमिका में उस विषय पर पूर्व में किए गए कार्य को भी बताया जा सकता है।
- विषय से जुड़ी हुई अन्य बातें जैसे देश/प्रदेश/भाषा/जीवन की जानकारी भी दी जा सकती है।
- आमतौर पर भूमिका ऐसी होनी चाहिए जिससे कोई भी पाठक (चाहे वह किसी भी विषय का विद्यार्थी हो) विषय के बारे में जानकारी ले सके।
- प्राकल्पना (Hypothesis) को यहाँ लिखा जाए।
- आप आगे के पृष्ठों में क्या लिखने वाले हैं इसके बारे में भी एक छोटा सा परिचय दें।

मुख्य भाग

- मुख्य भाग में विषय-वस्तु की व्याख्या की जाती है।
- यह भाग आमतौर पर कई अन्य छोटे-छोटे भागों (उपशीर्षकों के साथ) में बंटा होता है।
- उपशीर्षकों का चयन शोध की विषय-वस्तु को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए।
- मुख्य भाग में तालिकाओं, चित्रों, आरेखों आदि को दिया जा सकता है।
- मुख्य भाग में विश्लेषण किया जाता है।

निष्कर्ष / उपसंहार

- यहाँ शोध का सार (summary) लिखा जाता है।
- यहाँ आपके शोध प्रश्न का उत्तर होता है।
- निष्कर्ष मुख्य भाग में किए गए विश्लेषण अथवा व्याख्या पर ही आधारित होना चाहिए।
- निष्कर्ष संक्षिप्त होना चाहिए।

संदर्भ सूची:

- संदर्भ सूची में उन पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, अप्रकाशित पांडुलिपियों, शोध लेखों का विवरण दिया जाता है जिनका आपने शोध में उपयोग किया है।
- संदर्भ सूची में जहाँ तक संभव हो पुस्तक अथवा शोध लेख के नाम के साथ लेखक, वर्ष, प्रकाशक, स्थान तथा पृष्ठ संख्या का उल्लेख अवश्य होना चाहिए।
- संदर्भ सूची में इंटरनेट की वेबसाईटों का भी उल्लेख किया जा सकता है। उनकी पूरी कड़ी (link) के साथ उस वेबसाईट को किस तारीख को देखा गया है, इसका उल्लेख ब्रैकेट में करें।

HIND 903 - अनुसंधान एवं प्रकाशन नैतिकता
RESEARCH AND PUBLICATION ETHICS

I. दर्शन और नीतिशास्त्र (3 घंटे)

1. दर्शन, परिभाषा, प्रकृति और कार्यक्षेत्र, अवधारणा, शाखाओं का परिचय
2. नैतिकता, परिभाषा, नैतिक दर्शन, नैतिक निर्णय की प्रकृति और प्रतिक्रियाएं

2. वैज्ञानिक आचरण (5 घंटे)

1. विज्ञान और अनुसंधान के संबंध में नैतिकता
2. बौद्धिक ईमानदारी और अनुसंधान अखंडता
3. वैज्ञानिक कदाचार: मिथ्याकरण, झूठे कथन गढ़ना और साहित्यिक चोरी (FFP)
4. निरर्थक प्रकाशन: दोहरावट और अंशछादित प्रकाशन, सलामी स्लाइसिंग (Salami Slicing)
5. चयनात्मक रिपोर्टिंग और डेटा की गलत बयानी

3. प्रकाशन नीतिशास्त्र (7 घंटे)

1. प्रकाशन नैतिकता: परिभाषा, परिचय और महत्व
2. सीओपीई, डब्ल्यूएएमई आदि द्वारा स्थापित मानक व दिशा निर्देश के पहल / सर्वोत्तम परिपाटियाँ
3. हितों का टकराव
4. प्रकाशन कदाचार: परिभाषा, अवधारणा, समस्याएं जो अनैतिक व्यवहार और इसके विपरीत, प्रकारों को जन्म देती हैं।
5. प्रकाशन नैतिकता का उल्लंघन, कत्तृत्व और योगदान कत्तृत्व
6. प्रकाशन कदाचार, शिकायतों और अपील की पहचान
7. अमानक प्रकाशक और पत्रिकाएँ

4. ओपन एक्सेस पब्लिशिंग (4 घंटे)

1. ओपन एक्सेस प्रकाशन और पहल
2. प्रकाशक कॉपीराइट और स्व-संग्रह नीतियों की जाँच करने के लिए SHERPA / RoMEO ऑनलाइन संसाधन
3. अमानक प्रकाशनों की पहचान के लिए एसपीपीयू द्वारा विकसित औज़ार
4. जर्नल खोज / पत्रिका सुझाव उपकरण यथा- JANE, एल्सेवियर जर्नल खोज, स्प्रिंगर जर्नल सुझावकर्ता, आदि।

5. प्रकाशन दुराचार (4 घंटे)

A. समूह चर्चा (2 घंटे)

1. विशिष्ट नैतिक मुद्दें, एफएफपी, कत्तृत्व
2. हितों का टकराव
3. शिकायतें और अपील: भारत और विदेश से उदाहरण और धोखाधड़ी

B. सॉफ्टवेयर टूल (2 घंटे)

साहित्यिक चोरी सॉफ्टवेयर का उपयोग करना जैसे टर्निटिन, उरकुंड और अन्य खुले स्रोत सॉफ़्टवेयर उपकरण

6. डॉटाबेस और अनुसंधान मेट्रिक्स (7 घंटे)

A. डॉटाबेस (4 घंटे)

1. सूचीकरण डॉटाबेस

2. उद्धरण डॉटाबेस: वेब ऑफ साइंस, स्कोपस आदि।

B. अनुसंधान मेट्रिक्स (3 घंटे)

1. पत्रिका उद्धरण रिपोर्ट, एसएनआईपी, एसजेआर, आईपीपी, साइट स्कोर के अनुसार पत्रिकाओं का प्रभाव सूचक (इंपैक्ट फैक्टर)

2. मेट्रिक्स: एच-इंडेक्स, जी-इंडेक्स, आई 10 इंडेक्स ऑल्टमोट्रिक्स

Reference

Bird, A (2006), Philosophy of Science, Routledge.

Maclntyre, Alasdair (1967), A short History of Ethics, London

P. Chaddah, (2018) Ethics in Competitive Research : Do not get scooped ; do not get plagiarized, ISBN : 978-9387480865.

National Academy of Sciences, national Academy Engineering and Institute of Medicine, (2009). On being a Scientist : A Guide to Responsible Coneuct in Research : Third Edition. National Academics Press.

Resnik, D.B. (2011).What is ethics in research & why is it important. National Institute of Environmental

Health Sciences, 1-10. Retrieved from https://www.niehs.nih.gov/research/resources/bioethics/whatis/index.cfm

Beall, J. (2012). Predatory Publishes are corrupting open access. Nature 489(7415), 179-179. http://doi.org/10.10.38/489179a

Indian National Science Academy (INSA), Ethics in Science Education, Research and Governance(2019),

ISBN : 978-81-939482-1-7, hptt://www.insaindia.res.in/pdf/Ethics_Book.pdf